

JAGRAN CITY.

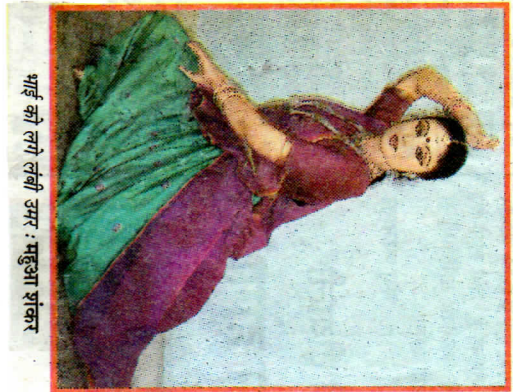
RAJASTHAN PATRIKA

सच्ची भावना बिना कुछ नहीं

महुआ शंकर (कथक नृत्यांगना)

को है भी रिश्ता सच्ची भावना पर टिका होता है। मैं देखती हूँ कि बहुत सी लड़कियां मुँह बोले भाई बना लेती हैं, लेकिन ऐसे रिश्ता को निभाना बहुत मुश्किल होता है। संबंधों की गहवाई समझना हर किराँ के बंध की बात नहीं। जैसे भी, भाई-बहन का रिश्ता ऐसी चीज नहीं, जिसे स्वयं के तगजु में तोला जा सके। जहाँ दिल मिलते हैं, वहाँ प्यार भी नजर आता है। मैं अपने भाई की लंबी उम्र की कामना सच्चे दिल से करती हूँ। यही नहीं, शास्त्रीय नृत्य-संगीत को परंपरा के अनुसार गुरु को भी टीका किया जाता है।

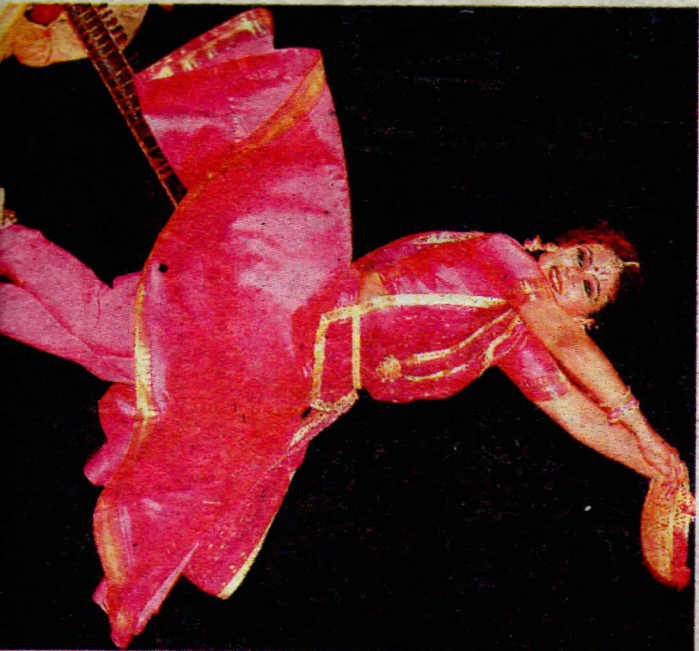
भाई से मिलने एक नहीं, दस बार जाऊँगी



भाई को लगे लंबी उम्र : महुआ शंकर

JAGRAN CITY. 16th Mar 2007

दिल्ली में बृज की होली



होली के कई दिन बाद भी इस रंग-बिरंगे त्योहार की धूम राजधानी में छाई हुई है। पिछले दिनों तो दिल्ली में बृज की होली की छटा भी देखने को मिली। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की ओर से कामनी आर्टिस्टियम में कथक नृत्य की प्रशिक्षण की गई। इस अवसर पर उभरती नृत्यांगना महुआ शंकर ने नृत्य कौशल से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

महुआ ने कथक की तीन ताल, सोलह मात्रा, विलंबित ताल, उपज थाल, लड़ी, सोलह चक्र, तीन चक्र, बराबर ताल, तिहाइयों आदि की सफल प्रशिक्षण की। नृत्य के जरिए उन्होंने विश्वप्रसिद्ध बृज की होली के दर्शन भी कराए।

बिवादीन महाराज रचित 'देखो होली के खेलइया कैसे बन-बन आए...' और 'रितु बसंत आए मन भाए' सरीखे गीतों की प्रशिक्षण के दौरान महुआ का अंदाज लुभावना था। अंबिका प्रसाद, दीपक, शेमन, मतलूब और गुलाम वासिस ने संगत की। कार्यक्रम के दूसरे चरण में गायक बंधु रितेश-रजनीश मिश्रा ने तुमरी, कजरी, होरी आदि सुनाकर लोगों को भाव-विभोर कर दिया। इस

को भाव-विभोर कर दिया। इस